an>

Title: Need to restrict the import of dairy products in the country.

**श्री राजू शेट्टी (हातकणंगले) :** समूचे भारत वर्ष में किसी न किसी कारण परेशान किसानों की आर्थिक स्थिति बद से बदतर बन गई है। एक तरफ आसमानी संकट जिसमें कहीं सूखा तो कहीं ज्यादा बारिश का मुकाबला किसान हर मोड़ पर कर रहा है। खेती में निकली हुई उपज को उचित दाम ना मिलने की वजह से और दूसरी ओर ऋण के बोझ से लाखों काश्तकारों को खुदकशी करनी पड़ रही है। यह बात हम सभी भारतीयों के लिए शर्मनाक है। इस दर्द भरी और शर्मनाक स्थिति में किसानों को राहत सिर्फ दुग्ध व्यवसाय के वजह से मिली। सभी आदरणीय सदस्य यह अच्छी तरह जानते हैं कि पशुपालन और दुग्ध व्यवसाय खेती पूरक ही नहीं बल्कि खेती व्यवसाय का पर्याय बन गया है। देश में किसानों की आत्महत्याएं रोकने में दुग्ध व्यवसाय का बहुत बड़ा योगदान है। लेकिन इस दुग्ध व्यवसाय के सम्मुख कुछ विपरीत परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गई हैं। ऐसा गत कुछ दिनों पूर्व लिये निर्णयों से लगता है। उदाहरणस्वरूप दीपावली के त्यौहार से पहले अपने देश में बड़े तौर पर विदेश से लगभग 1300 मीट्रिक टन घी (बटर ऑयल की) पहली किश्त के तौर पर लाया गया जो तकरीबन 170 रूपये प्रति किलो से प्राप्त हुआ। इस समय देश में घी 300 रूपए प्रति किलो से ज्यादा दर प्राप्त कर रहा है। इस निर्णय की वजह से दुग्ध व्यवसाय को काफी क्षति पहुँची और ऐसी खबरे हैं कि और अधिक मात्रा में यह घी तथा अन्य दुग्ध पदार्थों के विदेश से आने की संभावना है। अगर ऐसा हुआ तो किसानों की आत्महत्याएं थमने के बजाय उसमें बढ़ोत्तरी हो सकती है।

अतः मेरा केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि आने वाले समय में ऐसा कोई कार्य प्रशासकीय स्तर पर ना करें। इसलिए कृषि और कृषक कल्याण और वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय आयात परमिट (इम्पोर्ट परमिट) देने में सतर्कता बरतें जिससे किसानों को सचमुच राहत मिले।